A Report on the Training Programme under NMPB Funded project on "Cultivation of Atish, Ban Kakri, Chora and other High Valued Temperate Medicinal Plants" held at Shaneri, Rampur, Shimla (H.P.) (11.02.2015)

Himalayan Forest Research Institute, Shimla organized one day training and demonstration programme on **'Cultivation of Atish, Ban Kakri, Chora and other High Valued Temperate Medicinal Plants'** at Shaneri, Rampur (H.P.) on 11.02.2015 under the 'National Medicinal Plants Board' funded project. Dr. P.S. Thakur, Former Mission Director, Horticulture Technical Mission, Govt. of Himachal Pradesh inaugurated the training programme. In his inaugural address, he briefed about the importance of temperate medicinal plants particularly for Horticulture state like Himachal Pradesh for diversification and generating additional farm income. He also elaborated the role of various missions for the benefit of local communities. In the end, Dr. Thakur stressed the importance of such training programmes, especially to motivate the Self Help Groups of Mahila Mandals towards commercial cultivation of medicinal plants in temperate Himalayas for income generation.

In the beginning, Dr. Sandeep Sharma, Scientist-F and Coordinator of the training programme welcomed all the 45 participants from Shaneri village of Rampur division of Shimla district of Himachal Pradesh and briefed about the day's event. The day's proceedings started with the presentation by Sh. Jagdish Singh, Scientist-E highlighting the activities of the institute. Dr. Vaneet Jishtu, Scientist-C talked about the importance and proper identification of temperate medicinal plants especially found in that region. He interacted with the highly motivated group in local dialects. Thereafter, Dr. Sandeep Sharma, Scientist-F explained the nursery techniques for raising Atish (*Aconitum heterophyllum*), Ban Kakri (*Podophyllum hexandrum*) Chora (*Angelica glauca*), Kukti (*Picrorhiza kurroa*) Mushakbala (*Valeriana jatamasi*) and also detailed about the NMPB funded project being implemented by HFRI, Shimla. He told the farmers that HFRI will provide planting material under this project for initiating cultivation in their field during April-May 2015 and also briefed on various marketing issues pertaining to medicinal plants, composting and vermi-composting techniques, organic farming etc for the benefit of participants. Sh. Jagdish Singh, Scientist-E discussed about the inter-cultivation of medicinal plants in orchards of temperate areas of Himachal Pradesh especially Apple Orchards. Dr. R.S. Minhas, Director Himalayan Organization of Organic Agriculture Product Research and Development (HIMOARD) also shared his valuable experiences with delegates pertaining to organic cultivation, certification and marketing of produce.

In the afternoon, various field techniques related to medicinal plants cultivation were demonstrate by Sh. Ramesh Kainthla, Forester, HFRI, Shimla. To benefit the participants in the end, open discussion was held among participants and the experts. During the discussion, participants freely interacted with the resource persons and their queries pertaining to various issues regarding nursery production and cultivation of temperate medicinal plants were duly addressed through expert opinion of the resource persons. At the end of the day of long training programme, Sh. Jagdish Singh extended formal Vote of Thanks to the participants and chief guest for sparing their valuable time and making this training programme success. Extensive coverage was given by the print and electronic media to this training programme.

Glimpses of Training and Demonstration programme

दैनिक भास्कर (12 फरवरी 2015)

निदेशक ने औषधीय पौधों की खेती की बागबानों दी जानकारी

रामपुर बुशहर| वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा राष्ट्रीय औषधीय पादार्थ बोर्ड के तत्वाधान से शनेरी में मूल्यवान एवं महत्वपूर्ण अतीस, चौरा, वन ककड़ी एवं औषधीय पौधों की खेती के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शुभारंभ सेवानिवृत परियोजना निदेशक बागवानी तकनीकी मिशन के डॉ पीएस ठाकुर ने किया। इस प्रशिक्षण शिविर के दौरान हिमाचल वन अनुसंधान से आये वैज्ञानिक डॉ संदीप शर्मा, डॉ जगदीश सिंह, डॉ बनीता बिष्ट ने प्रदेश में पाये जाने वाले प्रमुख एवं बहुमूल्य औषधीय पौधों के पहचान उपयोग कृषि तकनीक के बारे में बताया।

आपका फैसला (12 फरवरी 2015)

औषधीय खेती की दी जानकारी

रामपुर बुशहर, 11 फरवरी। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के सौजन्य से औषधीय पौधों की खेती हेतु महिलाओं के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन शिविर का आयोजन किया गया। यह आयोजन रामपुर खंड विकास की शिगंला पंचायत के शनेरी गांव में किया गया। इसमें रामपुर मंडल की 45 महिलाओं ने भाग लिया। महिलाओं को अतीश, चौरा, वनककड़ी एवं सम शीतोषण औषधीय पौधों की खेती करने बारे विस्तार से जानकारी दी गई। इस दौरान फलदार एंव वानिकी पौधों के मध्य औषधीय पौधों की खेती बारे भी बताया गया। इसके अलावा उच्च पर्वती भागों में पाए जाने वाले महत्व पूर्ण औषधीय पौधे जैसे पतीश, कडू, मुश्कवाला तथा चौरा की व्यावसायिक कृषि करण की तकनीक से अवगत करवाया गया। इस मौके पर डा. जगदीश सिंह, डा. संदीप शर्मा, डा.वनीत, रमेश कैथ, डा. आरएस मिन्हास तथा डा. डीएस ठाकुर ने लोगों को औषधीय खेती के गुर बताएं।

दैनिक सवेरा टाइम्स (12 फरवरी 2015)

महिलाओं को दी औषधीय खेती की जानकारी

एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन शिविर आयोजित

रामपुर बुशहर, 11 फरवरी (आत्मा) : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के सौजन्य से औषधीय पौधों की खेती हेतु महिलाओं के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन शिविर का आयोजन किया गया।

यह आयोजन रामपुर खंड विकास की शिगंला पंचायत के शनेरी गांव में किया गया, जिसमें रामपुर मंडल की 45 महिलाओं ने भाग लिया।

महिलाओं को अतीश, चौरा, वनककड़ी एवं सम शीतोषण औषधीय पौधों की खेती करने बारे विस्तार से जानकारी दी गई। इस मौके पर वैज्ञानिक डा. जगदीश सिंह, डा. संदीप शर्मा, डा. वनीत जिस्टु, वन विभाग के रमेश कैथ, हिमोर्ड के डा. आर.एस. मिन्हास तथा डा. डी.एस. ठाकुर ने लोगों को औषधीय खेती के गुर बताएं।

प्रशिक्षण में भाग लेती महिलाएं।

दिव्य हिमाचल (12 फरवरी 2015)

शनेरी में बताए औषधीय पौधों के फायदे

दिव्य हिमाचल ब्यूरो, रामपुर बुशहर

हिमाचल वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के तत्त्वाधान से शनेरी में मूल्यावान एवं महत्त्वपूर्ण अतीश, चौरा, वन ककडी एवं औषधीय पौधों की खेती के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन बुधवार को किया गया।

इस शिविर का शुभारंभ सेवानिवृत्त परियोजना निदेशक बागबानी तकनीकी मिशन के डा. पीएस ठाकुर ने किया। उन्होंने प्रदेश के समशीतोषण एवं औषधीय पौध नीति पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई। इस प्रशिक्षण शिविर के दौरान हिमाचल वन अनुसंधान संस्थान शिमला से आए वैज्ञानिक डा. सदीप शर्मा, डा. जगदीश सिंह, डा. बनीत बिष्टु ने प्रदेश में पाए जाने वाले प्रमुख एवं बहुमल्य औषधीय पौधों के पहचान उपयोग कृषिकरण तकनीक, केचुएं खाद बनाने की विधि अंतवर्त्तीए फसल के रूप में उगाने की विधि एवं उनमें लगने वाली बीमारियों के बारे में किसानों एवं महिलाओं की विस्तृत जानकारी दी। इसी प्रशिक्षण में डा. आरएस मिंहास निदेशक हिमोड ने जैविक कृषि की विस्तार से चर्चा की गई इस शिविर में रामपुर मंडल की 45 महिलाओं ने भाग लिया।